कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English (In Figures) | | | | | | | |

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [✓]

विषय Economics

परीक्षा का दिन Monday

दिनांक 19-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक [ ]

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया ... है।165/2019

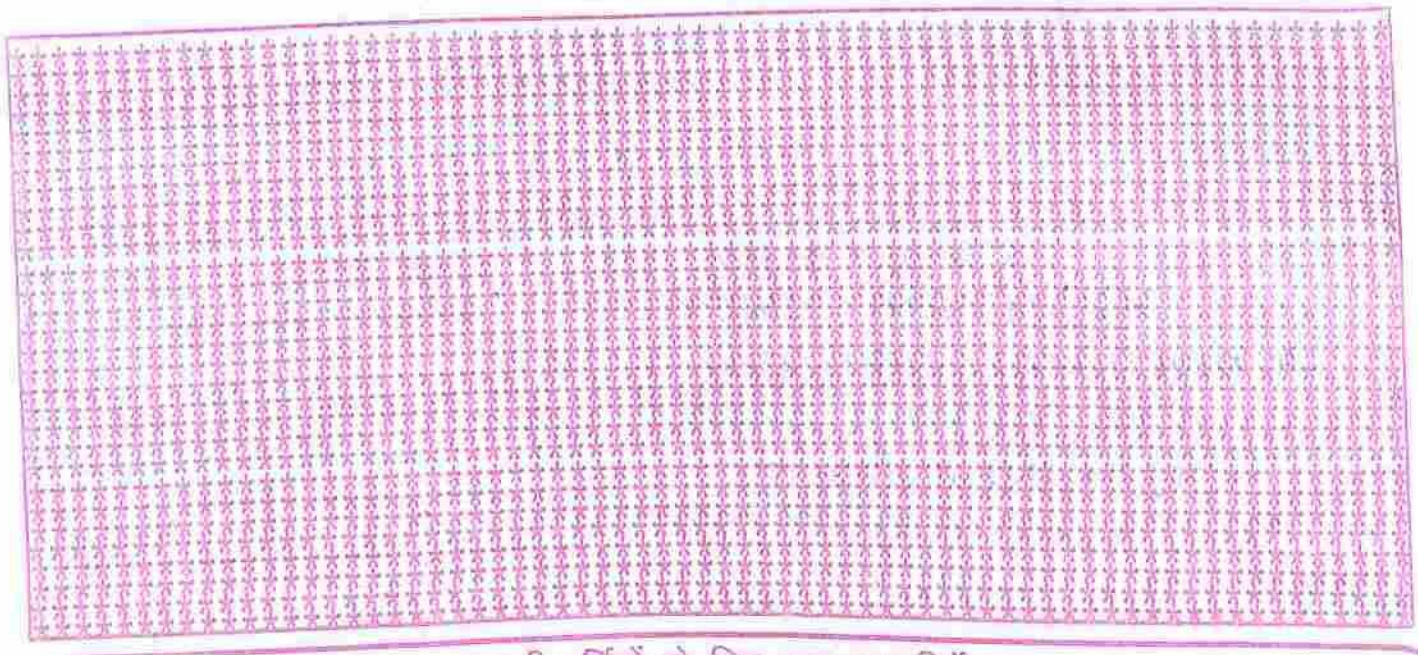

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	1.	अर्थशास्त्र की व्यष्टि (माइक्रो) मे हम व्यक्तिगत इकाई का अध्ययन करते है। यह शब्द ग्रीक भाषा से लिया गया है।
	2	उत्पादन संभावना वक्र वह होता है जो दो वस्तुओ के असंख्य किन्तु वैकल्पिक संयोगो को बताता है। डोमीनिक सेल्वोटर के अनुसार :— वह वक्र जो यह बताता है कि एक देश उपलब्ध श्रेष्ठतम तकनीक एवं अपने सभी संसाधनो का प्रयोग करते हुए वस्तुओ के विभिन्न और वैकल्पिक संयोगो का उत्पादन करता है उसे उत्पादन संभावना वक्र या वस्तु रूपान्तरण वक्र कहते है।
	3.	अर्थव्यवस्था (economy) :— अर्थव्यवस्था से तात्पर्य एक देश के सामाजिक, राजनैतिक एव आर्थिक संरचना, ढाँचा एवं माडॅल होता है। एक देश की अर्थव्यवस्था के तीन भाग होते है – प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक।
	4.	लागत (cost) :– अर्थशास्त्र मे लागत से तात्पर्य एक वस्तु को उत्पादित करने के लिए उसके उत्पादन संसाधनों पर व्यय की राशी होती है। लागत के अनेक प्रकार होते है।
	5.	उत्पादन (Production) :– वस्तुओ मे उपयोगीता का सृजन करना ही उत्पादन कहलाता है – अल्फ्रेड मार्शल के अनुसार

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

6. बाजार (Market) :-
कर्नी के अनुसार :- बाजार से तात्पर्य एक ऐसा स्थान नहीं है जहाँ पर वस्तुएँ एवं सेवाएँ खरीदी-बेची जाती है बल्कि बाजार शब्द मे एक ऐसी विशिष्ट संस्था होती है जिसमे क्रेताओ एवं विक्रेताओ मे ऐसा स्वतन्त्र एवं प्रतिस्पर्धात्मक सम्बन्ध होता है कि किसी वस्तु का मूल्य उस स्थान पर स्वतः ही निर्धारित हो जाता है।

7. दो मध्यवर्ती वस्तुएँ :- रुई या धागा, ब्रेड बनाने के लिए आटा।

8. वस्तु विनिमय प्रणाली (Barter system) :- वह विनिमय प्रणाली जिसमे वस्तुओ के बदले वस्तुएँ खरीदी-बेची जाती है उसे वस्तु विनिमय प्रणाली कहते है।

9. राष्ट्रीय आय (National Income) :- एक वित्तिय वर्ष मे देश के नागरिक के द्वारा उत्पादित अन्तिम उपयोग वस्तुओ एवं सेवाओ की शुद्ध मात्रा का प्रचलित बाजार कीमत पर उस देश की मुद्रा मे व्यक्त मूल्यो के योग को ही राष्ट्रीय आय कहते है।

10. लोकतान्त्रिक व्यवस्था मे सरकार बजट संसद के समक्ष प्रस्तुत करती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

11. आर्थिक विश्लेषण (economic Analysis) की दो मान्यताएँ निम्न प्रकार से है -

(i) आर्थिक इकाई :- आर्थिक विश्लेषण मे यह माना जाता है कि आर्थिक इकाई (मानव) का अध्ययन किया जा रहा है अर्थात् वह एक सामान्य मनुष्य है, कोई सट्टाखोरी प्रवृत्ति का मनुष्य नहीं होना चाहिए।

(ii) अन्य बातें समान रहे :- आर्थिक इकाई का विश्लेषण करते समय अन्य बातों (उपभोक्ता की आय, स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत, उपभोक्ता की पसन्द, कीमत प्रत्याशाओं) मे कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए अन्यथा नियम लागू नहीं होगा।

12. तटस्थता मानचित्र (indifference map) :- जब एक से अधिक तटस्थता वक्रों को एक ग्राफ पेपर पर बनाया जाता है तो उसे तटस्थता मानचित्र (indifference map) कहते है। एक तटस्थता वक्र उपभोक्ता की सन्तुष्टि के विभिन्न किन्तु वैकल्पिक संयोगों को बताता है जिसमें उपभोक्ता तटस्थ होता है। ऊँचा तटस्थता वक्र उच्च सन्तुष्टि के स्तर को एवं मूल बिन्दु के समीप तटस्थता वक्र सन्तुष्टि के निम्न स्तर को बताता है।

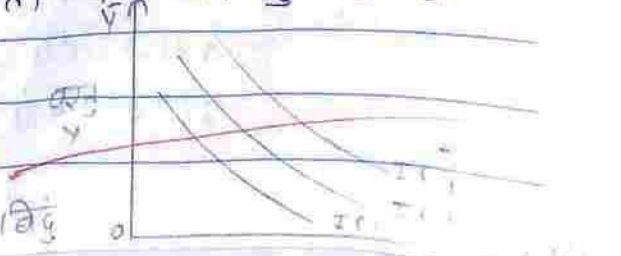

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

13. E.H. चेम्बरलीन के अनुसार :- एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता वह होती है जिसमे प्रतियोगिता का अध्ययन प्रतिस्पर्धा या एकाधिकार के अन्तर्गत किया जाता है किन्तु मेरे विचार मे एकाधिकारात्मक पूर्ण प्रतियोगिता एवं एकाधिकार की मध्यस्थ अवस्था है।

एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता मे विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है। वस्तुएँ विभेदीकृत प्रकृति की होती है। समूह मे फर्मों के प्रवेश एवं बहिर्गमन की स्वतन्त्रता होती है। इस प्रतियोगिता मे विक्रय लागते पाई जाती है। विज्ञापन के द्वारा वस्तुओ को विभेदीकृत किया जाता है अर्थात् गैर कीमत प्रतियोगिता होती है।

14. सकल घरेलू उत्पाद (Gross domestic product) एक देश की भौगोलिक सीमा मे देश के निवासियो, विदेशी निवासियो एवं कम्पनी के द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओ के मूल्यो का योग होता है। इसमें मध्यवर्ती वस्तुओ के भण्डार मे की गई वृद्धि को सम्मिलित किया जाता है।

इस प्रकार सकल घरेलू उत्पाद मे उपभोक्ताओ के द्वारा उपभोग पर किया गया व्यय, उत्पादको के द्वारा किया गया निवेश, सरकारी व्यय एवं वस्तु एवं सेवा के शुद्ध निर्यात की मात्रा को सम्मलित करते है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सूत्र रूप मे -

$GDP_{MP} = C + I + G + (X-M)$

यहाँ C = उपभोग व्यय I = निवेश व्यय

G = सरकारी व्यय

(X-M) = निर्यात - आयात

15. राष्ट्रीय आय की गणना मे निम्न दो कठिनाई आती है -

(i) कम पढ़े-लिखे लोग :- राष्ट्रीय आय की गणना करते समय कम पढ़े लिखे लोग बाधा बनते है। वे या तो अपनी आय को सरकार को बताने से भयभीत हो जाते है या फिर असाक्षरता के द्वारा इसे बताने मे समर्थ नहीं होते है।

(ii) वस्तु विनिमय प्रणाली :- विश्व के अधिकांश देशो मे अभी भी वस्तु विनिमय प्रणाली का प्रयोग वस्तुओ एवं सेवाओ के लेन देन मे किया जाता है।

16. समग्र माँग (Aggregate demand) :- एक दिए गए आय एवं रोजगार के स्तर पर एक देश की अर्थव्यवस्था मे वस्तुओ एवं सेवाओ की जो माँग की जाती है उसे समग्र माँग कहते है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

समग्र माँग मे विभिन्न कीमत स्तरो पर उपभोक्ताओ, उत्पादको, सरकार के द्वारा वस्तुओ एवं सेवाओ के व्यय को सम्मिलित किया जाता है।

समग्र माँग दो कारको पर निर्भर करती है उपभोग मांग व विनियोग मांग।

सूत्र रूप मे :-

$AD = C + I$ (बन्द अर्थव्यवस्था)

$AD = C + I + G + (X - M)$ (खुली अर्थव्यवस्था)

17. बजट घाटे का बजट :- घाटे का बजट एक लोकप्रिय अवधारणा है। जब सरकार के व्यय सरकार की आय से अधिक होते है तो उसे घाटे का बजट कहते है। वर्तमान समय मे लोकतान्त्रिक सरकारें घाटे के बजट (Deficit Budget) को अत्यन्त महत्व देती है। आर्थिक विभाग की बढती मांग सार्वजनिक सुविधाओ पर बढता व्यय एवं सामाजिक कल्याण की भावना के कारण लोकतान्त्रिक सरकारो मे सरकार का व्यय उसकी आय से अधिक हो जाता है। यही घाटे का बजट होता है

घाटे का बजट = कुल आय < कुल व्यय

12 नकद विहीन लेनदेन के दो माध्यम निम्न प्रकार से है-

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(i) चेक के द्वारा (By cheque) :- नकदविहीन लेनदेन का यह माध्यम सबसे सरल एवं सुविधापूर्ण है। इस माध्यम के द्वारा क्रेता (माल खरीदने वाला) अपने द्वारा क्रय की गई वस्तुओं के लिए विक्रेता को भुगतान उस पर चेक के द्वारा कर सकता है। इसके लिए क्रेता को अपने बैंक से चेक बुक लेनी होती है।

(ii) इन्टरनेट बैंकिंग के द्वारा (By Internet Banking) :- इन्टरनेट बैंकिंग के द्वारा एक व्यक्ति अपने द्वारा क्रय की गई वस्तुओं एवं सेवाओं का ऑनलाइन भुगतान इन्टरनेट के माध्यम से कर सकता है। विभिन्न प्रकार के बिलों का भुगतान इसके द्वारा ही किया जाता है।

19. तटस्थता वक्र की दो विशेषताएँ निम्न प्रकार से है :-

(i) तटस्थता वक्र मूल बिन्दु के उन्नतोदर होते है (convex to the origin) :- तटस्थता वक्र धरती प्रतिस्थापन की सीमान्त दर के कारण मूल बिन्दु के उन्नतोदर (convex to the origin) होते है। तटस्थता वक्र वस्तुओं एवं सेवाओं के विभिन्न किन्तु वैकल्पिक संयोगों को बताता है जिससे एक उपभोक्ता तटस्थ होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

$AR = \frac{TR}{Q}$ Q = बिक्री की मात्रा

$MR = TR_n - TR_{n-1}$

21. पूर्ण प्रतियोगी (Perfect competitive Market)

पूर्ण प्रतियोगी बाजार वह बाजार होता है जिसमे विक्रेताओ एवं उत्पादको की संख्या बहुत अधिक (असंख्य) होती है। इस बाजार मे समरूप वस्तुओ का उत्पादन किया जाता है। उद्योग मे फर्मो के प्रवेश एवं बहिर्गमन की स्वतन्त्रता होती है। दीर्घकाल मे फर्म को सामान्य लाभ ही प्राप्त होते है।

"जान रॉबिन्सन" (John Robinsan) :- पूर्ण प्रतियोगिता उस समय प्रचलित होती है जब बाजार मे विक्रेताओ की संख्या अत्यधिक होती है और वस्तु की माँग का वक्र पूर्णतया लोचदार होता है।

पूर्ण प्रतियोगिता मे वस्तु का माँग वक्र पूर्णतया लोचदार ($E_d = \infty$) होता है। चूँकि पूर्ण प्रतियोगिता मे फर्मो के समूह को उद्योग कहते है। उद्योग के द्वारा ही बाजार मे वस्तु की माँग एवं पूर्ति की शक्ति के द्वारा वस्तु की कीमत एवं मात्रा का निर्धारण किया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जाता है। इस निर्धारित कीमत पर फर्म वस्तु की कितनी ही मात्रा का विक्रय कर सकती है। इसे सूत्र रूप में निम्न प्रकार निकाल सकते है-

$AR = P \quad (AR = \frac{TR}{Q})$

$\frac{TR}{Q} = \frac{TR}{Q} \quad \begin{cases} TR = P \times Q \\ \frac{TR}{Q} = P \end{cases}$

इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में वस्तु की कीमत एवं औसत आगम बराबर होते है।

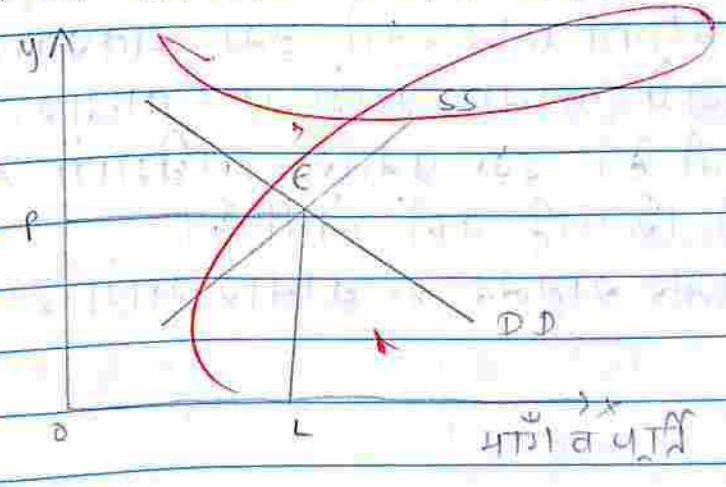

चित्र से स्पष्ट है कि जहाँ माँग व पूर्ति एक दूसरे को काटते है, वहीं साम्य मात्रा एवं साम्य कीमत निर्धारित हो जाती है। यहाँ OL साम्य मात्रा एवं OP साम्य कीमत है।

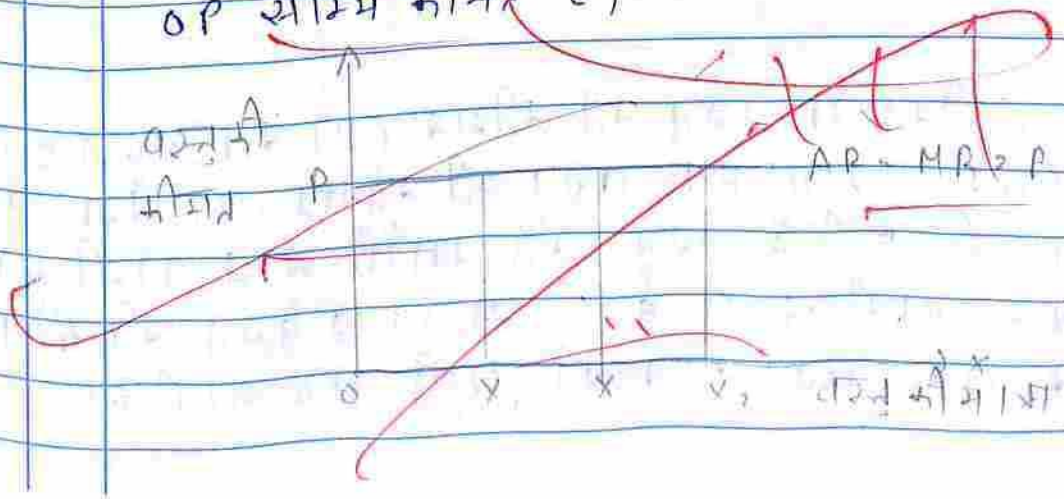

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

चित्र में ~~X~~ अक्ष पर वस्तु की मात्रा एवं Y अक्ष पर वस्तु की कीमत को दर्शाया गया है। इस निर्धारित कीमत पर फर्म वस्तु की अतिरिक्त मात्रा को बेच सकती है अर्थात् AR = MR यदि विक्रेता OX_1 मात्रा का विक्रय भी OP कीमत पर ही करता है।

2. बाजार संतुलन (Market equilibrium) :-

बाजार संतुलन से तात्पर्य बाजार की उस अवस्था से होता है जिसमें बाजार मांग व बाजार पूर्ति बराबर होती है। इस प्रकार अधिमांग एवं अधिपूर्ति की स्थिति नहीं होती है।

बाजार संतुलन = बाजार मांग = बाजार पूर्ति

वस्तु की कीमत	वस्तु की मांग	वस्तु की पूर्ति
5	25	5
10	22	15
15	20	20
20	15	25
25	10	28

तालिका में वस्तु की कीमत (P) को बढ़ता हुआ दिखाया गया है। वस्तु की कीमत (P) जैसे-जैसे बढ़ती जाती है वस्तु की मांगी जाने वाली मात्र कम होती जाती है। इस प्रकार वस्तु की कीमत के बढ़ने पर, वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

वस्तु की कीमत एवं माँग में नकारात्मक सम्बन्ध जबकि कीमत एवं पूर्ति में धनात्मक सम्बन्ध होता है।

बाजार माँग :- विभिन्न कीमतों पर बाजार के सभी उपभोक्ताओं के द्वारा वस्तु की माँगी गई मात्रा के योग को बाजार माँग कहते हैं।

बाजार पूर्ति :- विभिन्न कीमतों पर बाजार के समस्त उत्पादकों के द्वारा वस्तु की गई पूर्ति के योग को बाजार पूर्ति कहते हैं।

एक उपभोक्ता वस्तु की अधिकतम कीमत उसकी सीमान्त उपयोगिता तक दे सकता है और उत्पादक उस वस्तु की सीमान्त लागत के बराबर उसकी न्यूनतम कीमत रखता है।

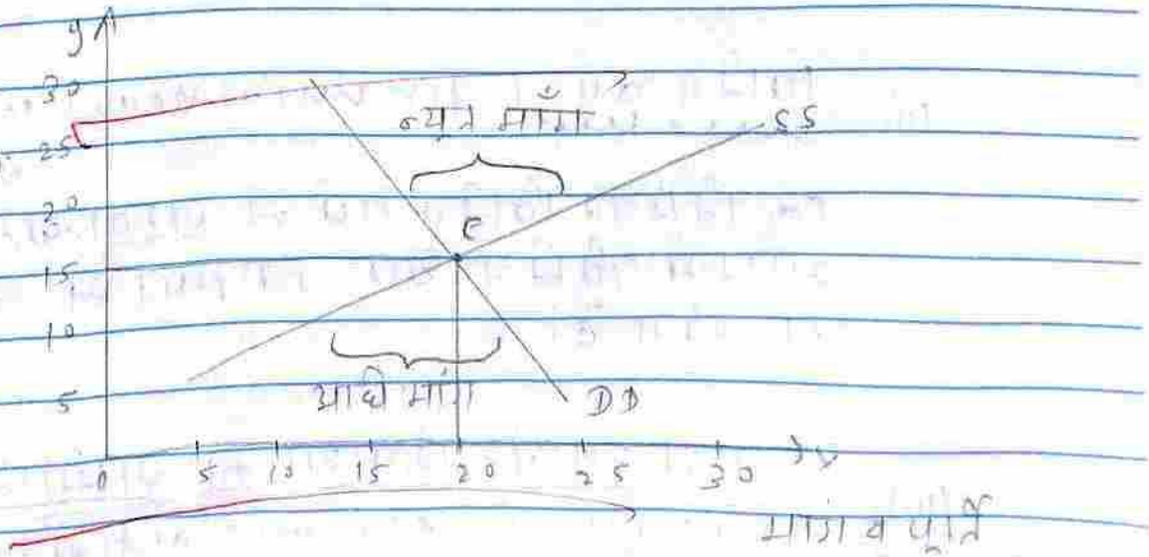

चित्र की व्याख्या :- X अक्ष पर वस्तु की माँग व पूर्ति को दिखाया गया है और

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

X अक्ष पर वस्तु की पूछ कीमत को दिखाया गया है। वस्तु की कीमत के बढ़ने पर वस्तु की माँग कम एवं पूर्ति अधिक होती है। प्रारम्भिक माँग वक्र DD व पूर्ति वक्र SS है जो एक दूसरे को E बिंदु पर काटते हैं। यही बाजार का सन्तुलन होता है। यहाँ पर OP = 15 वस्तु की साम्य कीमत एवं OL = 25 वस्तु की साम्य मात्रा है। इस स्थिति में अधिक माँग व न्यून माँग भी होती है।

23. राष्ट्रीय आय (National Income) की चार विशेषताएँ निम्न होती है -

(i) अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित (Related to economy) :- एक देश की राष्ट्रीय आय उस देश की अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित होती है जहाँ उसकी गणना की जाती है।

(ii) वित्तीय वर्ष (Financial year) :- एक देश की राष्ट्रीय आय एक निश्चित वित्तीय वर्ष से सम्बन्धित होती है। भारत में वित्तीय वर्ष 1 April से 31 March तक होता है।

(iii) उत्पादक आर्थिक क्रियाओं को सम्मिलित (include to Productive economic activity) :- राष्ट्रीय आय में एक देश की उत्पादक आर्थिक क्रियाओं को सम्मिलित

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

किया जाता है न कि अनुत्पादक आर्थिक क्रियाओं को सम्मिलित नहीं होती हैं।

(iv) प्रचलित बाजार कीमत (Prevailed Price of market) :- राष्ट्रीय आय की गणना में उस देश की बाजार कीमत को ही सम्मिलित किया जाता है।

24. मुद्रा :- मुद्रा एक ऐसी वस्तु है जो विनिमय के माध्यम, मूल्य के मापक एवं स्थगित भुगतानों के आधार के रूप में स्वतन्त्र, विस्तृत एवं सामान्य रूप से स्वीकृत होती है।

मुद्रा के कार्य

प्राथमिक कार्य	द्वितीयक कार्य	आकस्मिक कार्य	अन्य कार्य
→ मूल्य का मापक → विनिमय का माध्यम	→ भावी भुगतानों का आधार → मूल्य संचय का साधन → क्रय शक्ति हस्तान्तरण	→ राष्ट्रीय आय का वितरण → सम्पत्ति की तरलता → साख का आधार	→ शोधन क्षमता का सूचक → मानवीय इच्छाओं का वाहक

इन कार्यों में से 4 कार्यों का विस्तृत वर्णन किया जा रहा है -

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(i) विनिमय का माध्यम (Medium of exchange) :- मुद्रा का जन्म ही विनिमय के माध्यम के रूप में हुआ था। आज मुद्रा के द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं का आसानी से विनिमय किया जा सकता है। विनिमय के माध्यम के रूप में मुद्रा ने उपभोक्ताओं की अनेक आवश्यकताओं को पूरा कर दिया है।

(ii) मूल्य का मापक :- मुद्रा के द्वारा वर्तमान में किसी भी वस्तु का मूल्य आसानी से मापा जा सकता है। मुद्रा के जन्म के द्वारा ही एक देश की राष्ट्रीय आय की गणना की जा सकती है।

(iii) राष्ट्रीय आय का वितरण (Distribution of National Income) :- मुद्रा के द्वारा एक देश में सभी क्षेत्रों के मध्य राष्ट्रीय आय का समान वितरण हो जाता है। समान वितरण होने पर एक देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ एवं मजबूत बन सकती है। अमीरों पर अधिक कर एवं गरीबों पर कम कर लगाया जाना चाहिए।

(iv) शोधन क्षमता का सूचक (Indication of Solvency ability) :- आज जिस भी व्यक्ति के पास मुद्रा है उसके पास वस्तुओं

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

एवं सेवाओं के मूल्यों का भुगतान करने की क्षमता (Pay to ability) भी होती है। आज जिस व्यक्ति के पास मुद्रा है उसे धनवान माना जाता है।

25. समष्टि आर्थिक साम्य (Macro economic equilibrium) :- समष्टि आर्थिक साम्य वहाँ होता है जहाँ पर समग्र मांग (Aggregate demand) एवं समग्र पूर्ति (aggregate supply) बराबर होती है।
सूत्र के रूप में
आर्थिक साम्य (समष्टि) = समग्र मांग = समग्र पूर्ति
AD = AS

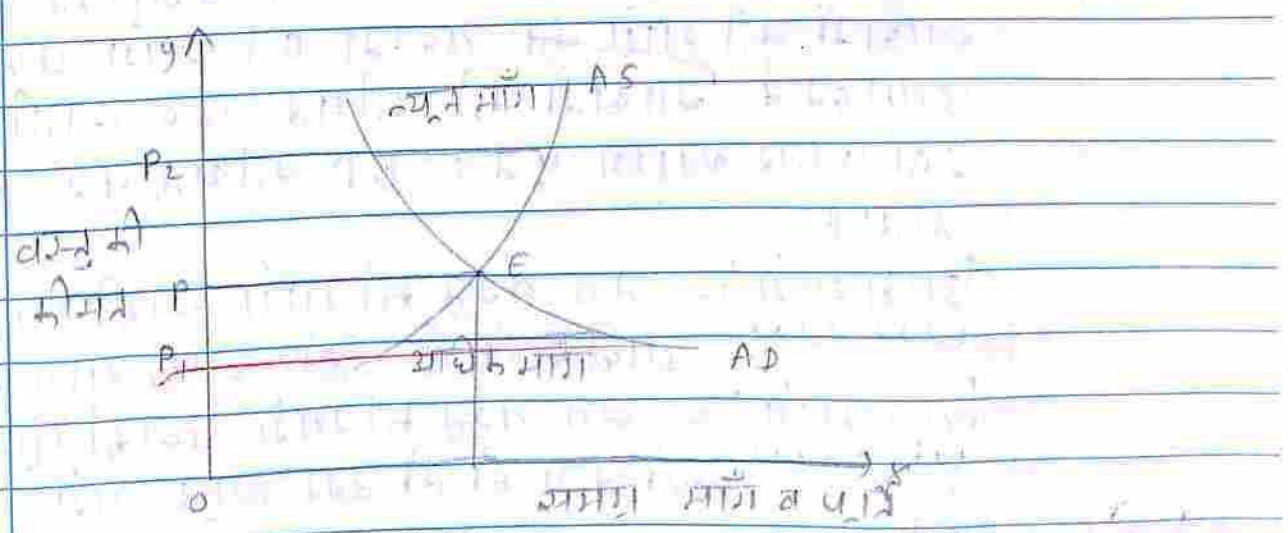

चित्र से स्पष्ट है कि X अक्ष पर समग्र मांग व पूर्ति को दर्शाया गया है वहीं Y अक्ष पर कीमत को दिखाया है। समग्र मांग AD व समग्र पूर्ति AS एक दूसरे को E बिंदु पर काटते हैं। यही समष्टि आर्थिक साम्य कहलाता है। इस समष्टि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

आर्थिक साम्य पर वस्तु की कीमत OP साम्य कीमत एवं OL साम्य मात्रा निर्धारित होती है। अब यदि वस्तु की कीमत बढ़कर OP_2 हो जाती है तो इस स्थिति में वस्तु की समग्र पूर्ति समग्र मांग से अधिक होती है इस प्रकार उत्पादक के पास बिना बिका स्टॉक पड़ा रहता है वह अपनी वस्तुओं को बेच नहीं पाता है। इस प्रकार कीमत घटकर पुनः साम्य कीमत OP हो जाती है।

इस प्रकार यदि वस्तु की कीमत OP_1 हो जाती है तो वस्तु की समग्र मांग समग्र पूर्ति से अधिक होती है। इससे प्रभावित होकर उत्पादक उत्पादन बढ़ाने के लिए उत्पादन के साधनों की मांग को बढ़ाता है। मांग बढ़ने पर उत्पादन के साधनों की कीमत बढ़ जाती है। इस प्रकार साम्य पुनः OP कीमत पर हो जाता है।

'अधिमांग' :- जब वस्तु की मांग उसकी पूर्ति से अधिक हो तो उसे अधिमांग कहते हैं

'न्यून मांग' :- जब वस्तु की मांग उसकी पूर्ति से कम हो तो उसे न्यून मांग कहते है।

26. सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) = 0.8
निवेश गुणक K = आय में परिवर्तन ΔY / निवेश में परिवर्तन ΔI

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

$K = \frac{1}{1 - MPC} = \frac{1}{1 - 0.8} = \frac{10}{0.2} = 5$

$K = 5$ होगा।

27. बजट :- बजट एक लेखा विवरण प्रपत्र होता है जो सरकारी की अनुमानित आय एवं व्यय और आगामी वित्तीय वर्ष की सामाजिक-आर्थिक योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में बताता है।

इतिहास :- बजट शब्द की उत्पत्ति फ्रांसीसी भाषा के Bougette शब्द से हुई है। सन् 1733 में बजट को इंग्लैण्ड में जादू के पिटारे के रूप में वर्णित किया गया था।

बजट के मुख्यतया 4 उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं -

(i) विकास को दिशा प्रदान करना (Move to direction to development) :- बजट (Bougette) का प्रमुख उद्देश्य आर्थिक विकास को प्रभावित करना होता है। बजट न केवल आर्थिक विकास को प्रभावित करता है बल्कि देश के आर्थिक विकास को गति एवं दिशा भी प्रदान करता है। इस प्रकार बजट किसी देश के सम्पूर्ण विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

(ii) कीमत स्थिरता प्रदान करना (Provide to Stability

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

of Price) :- बजट के द्वारा सरकार देश के लोगो पर नए-नए कर लगाती है एवं जनता के आधिक्य आय को स्वयं के पास रखकर देश की अर्थव्यवस्था मे वस्तु की कीमत को स्थिरता प्रदान किया जाता है।

(iii) उत्पादन मे वृद्धि :- एक देश की सरकार बजट के द्वारा सहत कार्यक्रमो मे दी गई कराधेपन छूट एवं रियायतो के द्वारा देश मे वस्तु एवं सेवाओ के उत्पादन मे वृद्धि करता है। वस्तुओ एवं सेवाओ का उत्पादन बढने से राष्ट्रीय आय मे वृद्धि होती है। यह उत्पादन की संरचना को भी निर्धारित करता है।

(iv) आय का समान वितरण (equal distribution of National Income) :- बजट के द्वारा एक देश की सरकार देश के सभी वर्गों के मध्य (अमीर एवं गरीब) आय का समान वितरण करती है। अमीरो पर अधिक कर एवं गरीबो पर कम कर लगाकर या सब्सिडी प्रदान कर उनके विकास को सुनिश्चित करती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

28. माँग की कीमत लोच :-

श्रीमती जॉन राबिन्सन के अनुसार – किसी वस्तु की कीमत पर माँग की लोच कीमत में थोड़े से परिवर्तन के प्रत्युत्तर में वस्तु की क्रय मात्रा में आनुपातिक या प्रतिशत परिवर्तन को कीमत में आनुपातिक या प्रतिशत परिवर्तन से भाग देकर प्राप्त किया जाता है अर्थात्

e_d = माँग की मात्रा में आनुपातिक / प्रतिशत परिवर्तन / कीमत में आनुपातिक या प्रतिशत परिवर्तन

$$e_d = \frac{\frac{\Delta q}{q}}{\frac{\Delta P}{P}}$$

$$e_d = \frac{\Delta q}{q} \times \frac{P}{\Delta P} \quad \text{या} \quad \frac{\Delta q}{\Delta P} \times \frac{P}{q}$$

यहाँ e_d = माँग की कीमत लोच
Δq = माँग में परिवर्तन
ΔP = कीमत में परिवर्तन
P = प्रारम्भिक कीमत
q = प्रारम्भिक मात्रा

माँग की कीमत लोच की 5 श्रेणीयाँ होती हैं -
(i) पूर्णतया लोचदार माँग ($e_d = \infty$)
(ii) लोचदार माँग ($e_d > 1$)

परीक्षार्थी उत्तर

(iii) इकाई के बराबर लोच ($e_d = 1$)
(iv) इकाई से कम लोच या बेलोचदार मांग ($e_d < 1$)
(v) पूर्णतया बेलोचदार माँग ($e_d = 0$)

इन प्रकारों में से दो श्रेणी का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा रहा है -

(i) पूर्णतया लोचदार मांग ($e_d = \infty$) :- पूर्णतया लोचदार मांग में कीमतों के स्थिर रहने पर वस्तु की कितनी ही मात्रा की मांग की जा सकती है। पूर्णतया लोच दार मांग में कीमतों में थोड़ी से भी वृद्धि करने पर माँग शून्य तक हो सकती है। इस प्रकार इस पूर्णतया लोचदार माँग में वस्तु की माँग कम या अधिक हो सकती है।

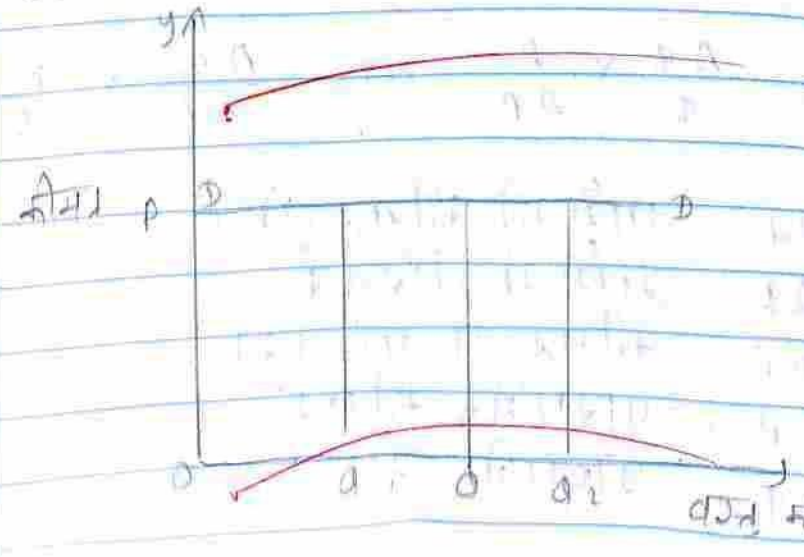

चित्र से स्पष्ट है कि वस्तु की माँग को X अक्ष व वस्तु की कीमत को Y अक्ष पर दिखाया गया है। चित्र में OP कीमत पर वस्तु की माँग

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

OQ, ~~OQ~~, OQ₂ कुछ भी हो सकती है। इसी कारण ed = ∞ होता है।

(ii) पूर्णतया बेलोचदार माँग (Perfectly inelastic demand) :- पूर्णतया बेलोचदार माँग अत्यधिक आवश्यक वस्तुओं की होती है। वस्तु की माँग के स्थिर रहने पर वस्तु की कीमत कुछ भी हो सकती है अर्थात् ed = 0

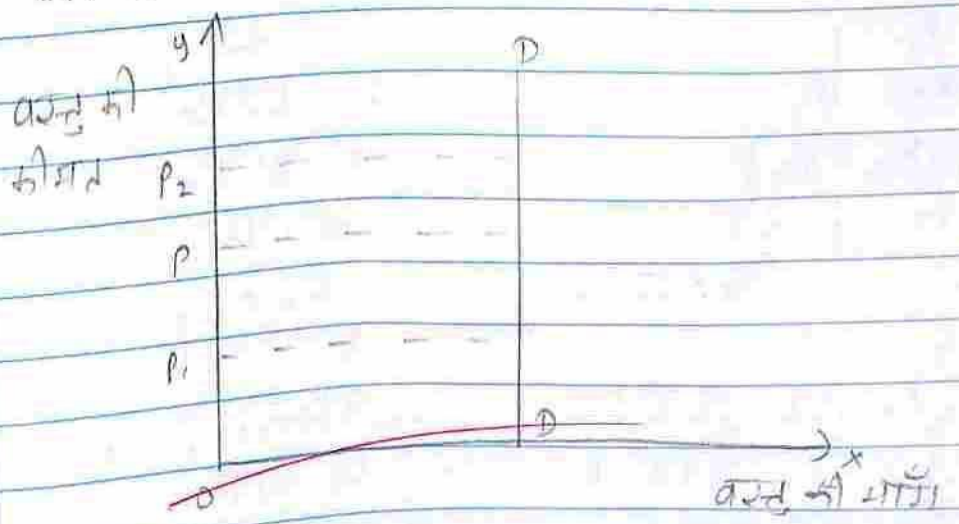

चित्र से स्पष्ट है कि वस्तु की माँग को x अक्ष एवं वस्तु की कीमत को x अक्ष पर दिखाया गया है। वस्तु की माँग DD पूर्णतया बेलोचदार है। वस्तु की कीमत OP, OP₁, OP₂ कुछ भी होने पर वस्तु की माँगी जाने वाली मात्रा OD स्थिर ही रहती है। इसलिए ed = 0 होता है।

परीक्षक द्वारा प्रश्न अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

29. कुल आगम एवं कुल लागत विधि के द्वारा फर्म का संतुलन उस स्थिति में होता है जब कुल आगम = कुल लागत होती है।

कुल लाभ की गणना करने के लिए कुल आगम एवं कुल लागत में सर्वाधिक अन्तर को देखा जाता है। इसके लिए स्पर्श रेखाएँ खींची जाती है।

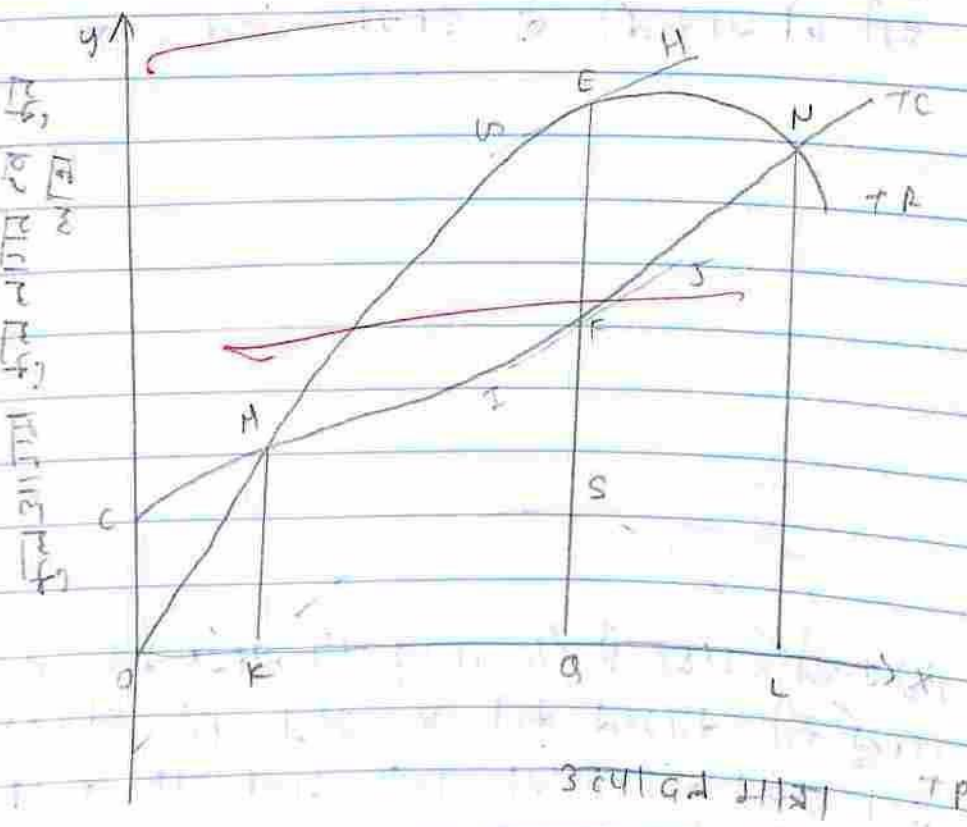

चित्र की व्याख्या :-

(1) X अक्ष पर वस्तु की उत्पादन मात्रा एवं Y अक्ष पर कुल आगम, कुल लागत एवं कुल लाभ दर्शाया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) कुल आगम शून्य से शुरू होता है तो यह बताता है कि उत्पादन इकाई शून्य होने पर, वस्तु से प्राप्त आगम भी शून्य होता है।

(iii) कुललागत Y अक्ष पर C बिन्दु से प्रारम्भ होती है तो यह बताती है कि वस्तु का उत्पादन करने के लिए फर्म को OC के बराबर स्थिरलागत वहन करनी पड़ती है।

(iv) E उत्पादन स्तर पर कुल लाभ वक्र ऋणात्मक स्थिति में होता है अर्थात् इस बिंदु पर कुललागत कुल आगम से अधिक होने के कारण फर्म को उत्पादन करने पर हानि होती है।

(v) TP कुल लाभ वक्र F बिन्दु पर शून्य होता है। इस स्थिति में फर्म को उत्पादन करने पर लाभ की हानि होती है।

(vi) फर्म को M बिन्दु पर कुल आगम, कुल लागत के बराबर होता है। इसे समस्थिति बिंदु (Break even Point) कहते हैं। इस बिंदु पर फर्म को न लाभ प्राप्त होता है और नही हानि।

(viii) TR कुल आगम एवं कुललागत के मध्य अधिकतम अन्तर या दूरी को ज्ञात करने के लिए दो स्पर्श रेखाएँ GH व EIJ खींची जाती है। ये दोनो स्पर्श रेखाएँ जहाँ पर कुल आगम एवं कुल

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

लागत TC वक्र को स्पर्श करती है वहीं अधिकतम लाभ की स्थिति होती है। स्पर्श रेखाएँ E व F बिन्दु पर स्पर्श कर रही है और इन दोनो बिन्दुओं के बीच फर्म को लाभ अधिकतम होते है।

(viii) उत्पादन K व L के मध्य होता है। K व L बिन्दु के मध्य फर्म को लाभ प्राप्त होते है। K व G बिन्दु उत्पादन के मध्य फर्म को बढती दर से लाभ प्राप्त होता है क्योंकि TR व TC के मध्य अन्तर अधिक होता जाता है। इसी प्रकार G व C बिन्दु के मध्य भी लाभ प्राप्त होते है लेकिन TR व TC का अन्तर कम होता जाता है। इन दोनो स्थितियो मे TP (कुल लाभ वक्र) सर्वप्रथम X अक्ष पर स्पर्श करते हुए अधिकतम मात्रा SQ तक पहुँच जाता है और फिर घटने लग जाता है।

(ix) कुल लाभ वक्र (TP) अधिकतम मात्रा SQ होती है। उत्पादन OQ के मध्य करने पर इस फर्म को अधिकतम लाभ प्राप्त होते है। इस स्थिति मे TP वक्र धनात्मक होता है।

(x) N बिन्दु पर कुल आगम एवं कुल लागत एक दूसरे के बराबर हो जाता है। इस बिंदु को समोच्चता बिन्दु भी कहते है। इस बिंदु पर फर्म को न लाभ होता है और न ही हानि होती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) यदि उत्पादक ON मात्रा के बाद भी उत्पादन करता है तो उसे उत्पादन करने पर हानि होती है क्योंकि कुल लागत वक्र कुल आगम वक्र के ऊपर स्थित होता है। इस स्थिति में कुल लाभ वक्र X अक्ष को स्पर्श करते हुए ऋणात्मक हो जाता है।

निष्कर्ष :- कुल आगम एवं कुल लागत विधि के द्वारा फर्म के सन्तुलन को ज्ञात किया जा सकता है लेकिन यह प्रणाली वस्तु की कीमत के बारे में स्पष्ट सूचना नहीं देती है। कई स्पर्श रेखाएँ खींचने पर कुल आगम एवं कुल लागत वक्र के मध्य अधिकतम दूरी ज्ञात हो पाती है।

20. साख नियन्त्रण :- एक देश की अर्थव्यवस्था में मौद्रिक एवं बैंकिंग क्षेत्र को नियमित एवं नियन्त्रित करने के लिए साख नियन्त्रण की तकनीक को अपनाया जाता है। इस तकनीक के द्वारा देश की अर्थव्यवस्था में मुद्रा स्फीति एवं मुद्रा अपस्फीति जैसी विकट समस्याओं से देश को बाहर निकाला जा सकता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

केन्द्रीय बैंक के द्वारा साख नियन्त्रण के उपाय

मात्रात्मक उपाय	गुणात्मक उपाय
→ बैंक दर	→ चयनात्मक साख नियन्त्रण
→ खुले बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों का विक्रय	→ साख की राशनिंग
→ CRR व SLR में परिवर्तन	→ नैतिक दबाव
	→ प्रचार
	→ प्रत्यक्ष कार्यवाही

गुणात्मक उपाय :- साख नियन्त्रण के गुणात्मक उपाय वे होते है जो साख की मात्रा को प्रभावित न कर उसकी दिशा को प्रेरित करते है। गुणात्मक उपायों के द्वारा अनुत्पादक कार्यों से ऋण को हटाकर उत्पादक कार्यों की ओर ऋण को दिया जाता है। इसके तीन उपाय निम्न प्रकार से है –

(1) चयनात्मक साख नियन्त्रण :- गुणात्मक उपाय के द्वारा इस चयनात्मक साख नियन्त्रण में उत्पादक क्षेत्रों में ऋण को दिया जाता है। यह एक विशेष क्षेत्र में साख के चयन को निर्धारित करती है।

(a) विभिन्न कार्यों के लिए साख की सीमा को पुनः निर्धारित करना।

(b) विलासिता की वस्तुओं के लिए अलग से किस्त निर्धारित करना।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(c) एक विशेष क्षेत्र से अनुत्पादक क्षेत्र से संसाधन को हटाकर उत्पादक क्षेत्र की तरफ मोड़ना।

(d) किसी वस्तु विशेष पर साख की मात्रा को हटाना।

(ii) साख की राशनिंग :- साख की राशनिंग के अन्तर्गत एक विशेष क्षेत्र के लिए साख की मात्रा को नियन्त्रित कर दिया जाता है। ताकि देश की अर्थव्यवस्था के सभी लोगो के पास वस्तु एवं सेवा उपलब्ध हो।

(a) किसी व्यापारिक बैंक के लिए पुनर्कटौती की सुविधा को पूर्णतया समाप्त करना।

(b) सभी व्यापारिक बैंको के लिए बिलो के पुनर्कटौती की सीमा को निर्धारित कर देना।

(iii) नैतिक दबाव :- केन्द्रीय बैंक व्यापारिक बैंको पर नैतिक दबाव के द्वारा भी साख की मात्रा को नियंत्रित एवं निर्देशित कर सकता है। नैतिक दबाव के अन्तर्गत केन्द्रीय बैंक अधिकृत व्यापारिक बैंको को निर्देश दे सकता है। उन्हे बाजार मे कीमत को नियन्त्रित करने के लिए कह सकता है।

(iv) प्रचार :- आज के समय मे विज्ञापन बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो चुका है। केन्द्रीय बैंक भी विज्ञापन के द्वारा अपने व्यापारिक बैंको को साख के नियन्त्रण के लिए निर्देशित कर सकता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(vii) प्रत्यक्ष कार्यवाही :- यदि उपयुक्त उपायों को करने के बाद भी व्यापारिक बैंक केन्द्रीय बैंक की दिशा-निर्देशों को नहीं माने और बाजार विफलताएँ होती हुई प्रतीत होती है तो केन्द्रीय बैंक उस व्यापारिक बैंक की पुनर्कटौती की सुविधा को पूर्णतया समाप्त कर सकता है यह सारा नियन्त्रण की सबसे कठोर कार्यवाही है।

निष्कर्ष :- अन्त मे यह कहा जा सकता है कि सारा नियन्त्रण की मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों ही विधियाँ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ये दोनों विधियाँ एक दूसरे की पूरक है न कि स्थानापन्न विधियाँ।

(समाप्त)